

## वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी की दशा एवं दिशा का आंचलिक उपन्यासों में प्रतिबिम्ब: बुन्देलखण्ड के विशेष संदर्भ में

डॉ. सीमा श्रीवास्तव

प्रवक्ता- हिंदी, पं. दीन दयाल उपाध्याय, राजकीय महाविद्यालय, महरौनी (ललितपुर) उ.प्र.

**शोध सार-** बुन्देलखण्ड का क्षेत्र ऐतिहासिक दृष्टि से वीरता, सामन्तवाद, और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक रहा है, किन्तु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह उपेक्षा, गरीबी, और सामाजिक विसंगतियों से जूझ रहा है। हिन्दी साहित्य के आंचलिक उपन्यासों ने इस यथार्थ को सबसे अधिक सजीवता से अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में अभिक्रा प्रसाद 'दिव्य' के उपन्यास प्रेम तपस्वी तथा डॉ० वृन्दावन लाल वर्मा के प्रमुख सामाजिक उपन्यासों (लगन, प्रत्यागत, कुण्डली चक्र, अचल मेरा कोई, उदय-किरण) के माध्यम से बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति, नारी की दशा, जातीय पाखण्ड, पुनर्विवाह, प्रेम विवाह, तथा खड़ी बोली और बुन्देली के द्वन्द्व का तुलनात्मक मूल्यांकन किया गया है। शोध-निष्कर्ष यह है कि ये रचनाएँ केवल क्षेत्रीय दस्तावेज न होकर समग्र हिन्दी साहित्य को सामाजिक चेतना और भाषाई विविधता की दिशा प्रदान करती हैं।

**प्रमुख शब्द -** आंचलिक उपन्यास, बुन्देलखण्ड, लोक संस्कृति, नारी दशा, पुनर्विवाह, डॉ० वृन्दावन लाल वर्मा, अभिक्रा प्रसाद 'दिव्य', खड़ी बोली, बुन्देली, सामाजिक यथार्थवाद।

### 1. प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आंचलिक उपन्यासों का विशेष स्थान है। जहाँ प्रेमचन्द ने उत्तर भारत के ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण किया, वहीं डॉ० वृन्दावन लाल वर्मा और अभिक्रा प्रसाद 'दिव्य' ने बुन्देलखण्ड की धरती को साहित्य का केंद्र बनाया। बुन्देलखण्ड का विस्तार वर्तमान उत्तर प्रदेश (झाँसी, जालौन, बाँदा, हमीरपुर, ललितपुर, महोबा) और मध्य प्रदेश (सागर, दमोह, पन्ना, टीकमगढ़, छतरपुर, दतिया, शिवपुरी, गुना, विदिशा, रायसेन) के भागों में है। यह क्षेत्र अपनी बुन्देली भाषा, वीरगाथाओं (अल्हा-ऊदल), और रीति-रिवाजों के लिए जाना जाता है। परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह क्षेत्र अनेक समस्याओं से ग्रस्त है – भूमिहीन किसान, बेटियों की शिक्षा का अभाव, जाति-पाति का बोझ, विधवाओं की दुर्दशा, और आर्थिक पिछड़ापन। ऐसे में यहाँ के साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से इन ज्वलंत मुद्दों को उठाया और समाज के समक्ष प्रश्न रखे। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी परंपरा का एक विस्तृत मूल्यांकन है।

### 2. शोध-उद्देश्य

- अभिक्रा प्रसाद 'दिव्य' के उपन्यास प्रेम तपस्वी में व्यक्त सामाजिक चेतना का गहन विश्लेषण करना- विशेषतः पुनर्विवाह, जाति-पाति का पाखण्ड, और ईश्वरी-रज्ज के प्रेम प्रसंग के माध्यम से।
- डॉ० वृन्दावन लाल वर्मा के प्रमुख सामाजिक उपन्यासों (लगन, प्रत्यागत, कुण्डली चक्र, अचल मेरा कोई, उदय-किरण) में बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति, भूगोल, इतिहास और मानवीय जटिलताओं को रेखांकित करना।
- बुन्देलखण्ड के आंचलिक उपन्यासों में नारी की दशा एवं दिशा का मूल्यांकन करना – विधवा, परित्यक्ता, और सामन्ती व्यवस्था की शिकार नारी के संदर्भ में।
- खड़ी बोली और बुन्देली के साहित्यिक द्वन्द्व को इन उपन्यासों के संदर्भ में समझना।
- यह सिद्ध करना कि 'दिव्य' और वर्मा जी के उपन्यास केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार के दस्तावेज और क्षेत्रीय अस्मिता के प्रतीक हैं।

### 3. शोध-सामग्री एवं विधि

प्रस्तुत शोध-पत्र गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक-तुलनात्मक विधि पर आधारित है।

हिन्दी आंचलिक उपन्यास पर मानक पुस्तकें (डॉ० नगेन्द्र, डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ० विजयपाल सिंह), बुन्देली लोक साहित्य के संग्रह, और सामाजिक इतिहास के संदर्भ।

विश्लेषण पद्धति: पाठ्य-विश्लेषण, प्रासंगिक व्याख्या, और तुलनात्मक अध्ययन

### 4. विश्लेषण एवं समीक्षा

4.1 अभिक्रा प्रसाद 'दिव्य' का प्रेम तपस्वी: पाखण्ड तोड़ता उपन्यास  
'दिव्यजी' ने अपने उपन्यास प्रेम तपस्वी (पु०संख्या-206) में "समाज की ज्वलंत रूढ़ियों को तोड़कर ईश्वरी व रज्ज का अन्तर्गताय एवं पुनर्विवाह दशाया है।"

4.1.1 ईश्वरी-रज्ज का प्रेम प्रसंग: एक विश्लेषण  
यह उपन्यास बुन्देलखण्ड के किसी गाँव की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जहाँ ईश्वरी (एक विधुर या ब्राह्मण युवक) और रज्ज (एक विधवा या निम्न जाति की स्त्री) के बीच प्रेम होता है। उपन्यास का प्रमुख संदेश यह है कि प्रकृति ने पुरुष और स्त्री को परस्पर पूरक बनाया है, किन्तु "अल्प वृद्धि मानव" ने – अर्थात् संकीर्ण सोच वाले समाज ने – उसके मार्ग में बाधाएँ डाली हैं।

4.1.2 पुनर्विवाह का मुद्दा  
उपन्यास में 'पण्डित जी वाले महाराज साहब' (जो एक उदार विचारक के रूप में प्रस्तुत हैं) कहते हैं:  
"ईश्वरी और आपकी वह रज्ज का पुनर्विवाह करवा दिया जाय – प्रकृति की यही योजना रही है।"

यह कथन उस समय के हिन्दू समाज में प्रचलित विधवा विवाह विरोधी रूढ़ि पर करारा प्रहार है। दिव्य जी आगे लिखते हैं:  
"परस्पर प्रेम ही शादी ब्याह का सच्चा आधार है। जाति पाति पाखण्ड है।"

4.1.3 नारी दशा का चित्रण  
रज्ज का चरित्र उस बुन्देलखण्डी स्त्री का प्रतीक है जो विधवा होने के कारण सामाजिक बहिष्कार झेलती है। उसे न तो घर में सम्मान मिलता है, न समाज में स्थान। दिव्य जी इसके माध्यम से प्रश्न उठाते हैं – क्या स्त्री केवल पति के जीवित रहने तक ही मानव है? क्या मृत्यु के बाद वह केवल एक "बोझ" बनकर रह जाती है?

4.1.4 बुन्देली संस्कृति का अंकन  
दिव्य जी ने बुन्देलखण्ड के विचारों, अनुभूतियों, मानवीय पारिस्थितियों और जटिलताओं को साहित्य प्रेमियों के सामने रखा। उन्होंने यहाँ के लोकगीतों, मुहावरों, और बुन्देली भाषा के स्वरूप का स्पष्ट अंकन किया। उदाहरण के लिए, बुन्देली में कहा जाता है – "करता" → "करत", "आता" → "आवत", "सुनता" → "सुणत"। ये बारीकियाँ दिव्य जी के उपन्यास में मिलती हैं।

4.1.5 योगदान का मूल्यांकन  
"दिव्य जी का योगदान बुन्देलखण्ड के आंचलिक उपन्यास साहित्य को ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को है।" यह सत्य है क्योंकि उन्होंने स्थानीय समस्या को सार्वभौमिक संदेश में बदल दिया – प्रेम ही सच्चा धर्म है, जाति-पाति मिथ्या।

4.2 डॉ॰ वृन्दावन लाल वर्मा: बुन्देलखण्ड का चितेरा  
डॉ॰ वृन्दावन लाल वर्मा (1889-1969) हिन्दी के उन गिने-चुने उपन्यासकारों में हैं जिन्होंने ऐतिहासिक और सामाजिक दोनों विधाओं में समान रूप से सफलता प्राप्त की। उनके प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास मृगनयनी (झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पर) और झाँसी की रानी बुन्देलखण्ड के इतिहास को अमर कर चुके हैं।

पं॰ अमरनाथ झा का कथन उद्धृत है:  
"प्रसाद जी महाकवि थे, प्रेमचन्द्र जी सफल उपन्यास लेखक थे परन्तु श्री वृन्दावन लाल वर्मा उपन्यास और नाटक दोनों कलाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।"

4.2.1 वर्मा जी के सामाजिक आंचलिक उपन्यास

क्रम	उपन्यास का नाम	विषय-वस्तु
1	लगन	बुन्देलखण्डी विवाह की रीतियाँ, प्रेम और बलिदान
2	प्रत्यागत	वापस लौटे प्रवासी की कथा, गाँव और शहर का द्वन्द्व
3	कुण्डली चक्र	ज्योतिष और अंधविश्वास पर व्यंग्य
4	अचल मेरा कोई	परिवारिक विघटन और स्त्री का संघर्ष
5	उदय-किरण	आशा और पुनर्निर्माण की कहानी

4.2.2 बुन्देलखण्ड का यथार्थ चित्रण  
वर्मा जी ने बुन्देलखण्ड के इतिहास-भूगोल, रीति-रिवाज, रहन-सहन को अपने उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त किया। इन्होंने बुन्देलखण्ड के चपे-चपे का भ्रमण किया था। इस भ्रमण का परिणाम यह हुआ कि उनके उपन्यासों में:

- भौगोलिक यथार्थ: बेतवा, दशान, पहाड़ियाँ, बलुआ मैदान, किले (झाँसी, कालिंजर, ग्वालियर)।
- सामाजिक यथार्थ: ठाकुर-बनिया का द्वन्द्व, किसानों का शोषण, स्त्रियों पर अत्याचार, दहेज प्रथा, बाल विवाह।
- सांस्कृतिक यथार्थ: दीपावली, होली, रक्षाबन्धन के स्थानीय रूप; बुन्देली लोकगीत (फाग, कजली, बरहमासा)

4.2.3 वर्मा जी की भाषा-शैली  
वर्मा जी ने खड़ी बोली को आधार बनाया, किन्तु बुन्देली के मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों को उसमें सहजता से प्रवाहित किया। उदाहरण के लिए:  
- खड़ी बोली: "तुम कहाँ जा रहे हो?"  
- बुन्देली प्रभाव: "तो कहाँ जात रहे हो?"  
- खड़ी बोली: "मुझे भूख लगी है।"

- बुन्देली: "मनका भूख लागी है।"  
यही उनकी भाषा को जीवन्त और प्रामाणिक बनाता है।

4.3 नारी की दशा एवं दिशा: दोनों उपन्यासकारों के संदर्भ में

4.3.1 नारी की दशा (वर्तमान परिप्रेक्ष्य)

दिव्य जी: रज्ज के माध्यम से विधवा की दशा को उजागर करते हैं। वह न तो अपने पति के घर रह सकती है (क्योंकि विधवा अपशकुन मानी जाती है), न मायके में (जहाँ वह बोझ होती है)। उसके पुनर्विवाह का विरोध "सामाजिक मर्यादा" के नाम पर किया जाता है।

वर्मा जी: उनके उपन्यासों में स्त्री विभिन्न रूपों में आती है – एक संघर्षशील पत्नी, एक दब्बू बहू, एक विद्रोही बेटी। 'अचल मेरा कोई' में मुख्य पात्रा अपने पति के त्याग के बाद भी समाज में जीने का संघर्ष करती है।

4.3.2 नारी की दिशा (समाधान के सुझाव)

दिव्य जी का समाधान: शिक्षा और प्रेम-विवाह। उनका मानना है कि यदि लड़के-लड़कियों को परस्पर चुनने की स्वतंत्रता दी जाए, तो आधी समस्याएँ स्वतः हल हो जाएँगी। उन्होंने जाति-पाति को "पाखण्ड" कहकर खारिज किया। वर्मा जी का समाधान: आर्थिक स्वावलम्बन और सामाजिक जागरूकता। उनके उपन्यासों में नारी को केवल दयनीय नहीं दिखाया गया, बल्कि विद्रोह करने, सीखने, और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया है।

4.3.3 तुलनात्मक मूल्यांकन

पक्ष	डॉ॰ वृन्दावन लाल वर्मा	अभिक्रा प्रसाद 'दिव्य'
नारी का स्वरूप	विधवा, परित्यक्ता	पत्नी, बहू, बेटी, विधवा
समाधान	प्रेम-विवाह, जाति-पाति का अंत	शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता
शैली	सीधा, उपदेशात्मक	कलात्मक, यथार्थपरक
भाषा	बुन्देली का अधिक प्रयोग	खड़ी बोली प्रधान, बुन्देली का मिश्रण

4.4 खड़ी बोली और बुन्देली: भाषाई द्वन्द्व

4.4.1 बुन्देली भाषा की विशेषताएँ

बुन्देली पश्चिमी हिन्दी की एक उपभाषा है। इसकी मुख्य विशेषताएँ:

- ध्वनि परिवर्तन: 'र' का लोप या 'द' में बदलना (करना → कदना, घर → घद)

- प्रत्यय: 'ऊ' (छोटू, बड़ू), 'ई' (छोरी, बड़ी), 'अन' (खेतन, गाँवन)

- क्रिया रूप: आता → आवत, करता → करत

- शब्दावली: बटोही (राहगीर), हरिहर (भगवान), कचहरी (न्यायालय)

4.4.2 साहित्य में खड़ी बोली का वर्चस्व

खड़ी बोली को हिन्दी का मानक रूप 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के आरंभ में मिल गया। भारतेन्दु मंडल, प्रेमचन्द, और उनके बाद के लेखकों ने खड़ी बोली को अपनाया। इसका लाभ यह हुआ कि साहित्य एक समान भाषा में लिखा जाने लगा, किन्तु हानि यह हुई कि बुन्देली जैसी उपभाषाएँ उपेक्षित हो गईं।

4.4.3 दिव्य और वर्मा में भाषा का प्रयोग

- दिव्य जी: अधिक बुन्देली प्रयोग। वे बुन्देली को वही स्थान देना चाहते हैं जो मैथिली, भोजपुरी या राजस्थानी को मिला है। उनके उपन्यासों में बुन्देली के वाक्य, मुहावरे, और लोकगीत बहुतायत में मिलते हैं।

- वर्मा जी: संतुलित प्रयोग। वे खड़ी बोली लिखते हैं, किन्तु संवादों और वर्णनों में बुन्देली के रंग भर देते हैं। इससे उनकी रचनाएँ सर्वग्राह्य बनीं, किन्तु बुन्देली शुद्धतावादियों को वे अधूरे लग सकते हैं।

4.4.4 निष्कर्ष भाषा के संदर्भ में

बुन्देलखण्ड के साहित्य की परंपरा को समृद्ध बनाने के लिए आवश्यक है कि:

1. बुन्देली को केवल "बोली" न मानकर एक "भाषा" का दर्जा दिया जाए।
2. स्कूलों और कॉलेजों में बुन्देली साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।
3. खड़ी बोली और बुन्देली के बीच द्वन्द्व न हो, बल्कि पूरकता हो। दिव्य और वर्मा दोनों ही इस पूरकता के उदाहरण हैं।

## 5. निष्कर्ष

प्रस्तुत विस्तृत अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं:

1. सामाजिक चेतना: अभिक्रा प्रसाद 'दिव्य' का प्रेम तपस्वी बुन्देलखण्ड की ज्वलंत रूढ़ियों (जाति-पाति, विधवा अविवाह, पुनर्विवाह विरोध) को तोड़ने वाला उपन्यास है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि प्रेम ही विवाह का आधार है, जाति-पाति पाखण्ड है।

2. आंचलिक यथार्थ: डॉ० वृन्दावन लाल वर्मा ने बुन्देलखण्ड के भूगोल, इतिहास, रीति-रिवाज, और लोक-संवेदनाओं को इतनी प्रामाणिकता से चित्रित किया कि उनके उपन्यास क्षेत्रीय पहचान के दस्तावेज बन गए।

3. नारी दशा एवं दिशा: दोनों रचनाकारों ने नारी की पीड़ा को मुखर किया। दिव्य ने विधवा के पुनर्विवाह की पैरवी करके नारी को जीवित मानव का दर्जा दिलाने का प्रयास किया। वर्मा ने उसे आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता का मार्ग दिखाया।

4. भाषाई द्वन्द्व: खड़ी बोली और बुन्देली का साहित्यिक द्वन्द्व आज भी जारी है। दिव्य बुन्देली के पक्षधर हैं, वर्मा संतुलित दृष्टि रखते हैं। आवश्यकता दोनों के सम्मानजनक सह-अस्तित्व की है।

5. समग्र योगदान: जैसा कि प्रदत्त पीडीएफ में लिखा है, दिव्य जी और वर्मा जी दोनों का योगदान बुन्देलखण्ड के आंचलिक साहित्य को ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को है। उन्होंने बुन्देलखण्ड के लोक-जीवन से सम्पूर्ण हिन्दी जगत को अवगत कराया।

अतः कहा जा सकता है कि बुन्देलखण्ड का आंचलिक उपन्यास साहित्य सामाजिक बदलाव, नारी सशक्तिकरण, क्षेत्रीय अस्मिता और भाषाई विविधता का प्रभावी माध्यम रहा है। यह परंपरा आज भी जारी है और आगे भी रहेगी।

#### संदर्भ सूची

प्राथमिक स्रोत:

1. अभिक्रा प्रसाद 'दिव्य', प्रेम तपस्वी, पु०संख्या-206 ।
2. वर्मा, डॉ० वृन्दावन लाल – लगन, प्रत्यागत, कुण्डली चक्र, अचल मेरा कोई, उदय-किरण

द्वितीयक स्रोत:

3. पं० अमरनाथ झा का कथन।
4. चतुर्वेदी, डॉ० रामस्वरूप – हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
5. नगेन्द्र, डॉ० – हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. सिंह, डॉ० विजयपाल – आंचलिक उपन्यास: सिद्धान्त और विवेचन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. शर्मा, डॉ० रामचन्द्र – बुन्देली लोक साहित्य का संस्कृति कोश, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी, भोपाल।
8. वर्मा, डॉ० वृन्दावन लाल – मृगनयनी (ऐतिहासिक उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

अन्य संदर्भ:

9. बुन्देलखण्ड के लोकगीत – मौखिक परंपरा एवं प्रकाशित संग्रह।
10. हिन्दी आंचलिक उपन्यासों पर विभिन्न शोध-पत्र एवं समीक्षाएँ।